5

I nopu

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने कृत्प्रत्ययों और कारक के विषय में जाना। इस पाठ में आप संस्कृत श्लोकों के माध्यम से सद्वचनों का ज्ञान प्राप्त करेंगे। सद्वचन से तात्पर्य है महान लोगों अर्थात् विद्वत् जनों द्वारा बताई गई मार्गदर्शक बातें जो एक उदात्त और नैतिक जीवन के लिए आवश्यक होती हैं।

mís';

यह पाठ पढने के बाद आप सक्षम होंगे:

- श्लोकों का शुद्ध उच्चारण कर पाने में;
- उन श्लोकों को अपने व्यवहारिक जीवन में प्रयोग कर पाने में;
- सद्वचनों के माध्यम से नैतिक मूल्यों का अपने जीवन में प्रयोग कर पाने में।

lnopu

5.1 iFkek'k

1. ;Fkk ádu pØ.k u jFkL; xfrHkor A
   rFkk i#"kdkj.k fouk no u fl);fr AfA

vUo;%& यथा हि एकेन चक्रेण रथस्य गतिः न भवेत् तथा पुरुषकारेण विना देवं न सिद्धयति।।

HkkokFk% जिस प्रकार से एक पहिये के आधार पर रथ चल नहीं सकता है उसी तरह पुराषार्थ के बिना भाग्य भी आपकी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सकता है।

2. iolt Ue—r del rn nofefr dF;r A
   rLekr i#"kdkj.k ;Ru d;knrfUær% A „A

vUo; %& (यत्) पूर्वजन्मकृतं कर्म (भवति) तत् दैवम् (भवति) इति (विद्वद्भिः) कथ्यते, तस्मात् (जनः) अतन्द्रितः (सन्) पुरुषकारेण यत्नं कुर्यात् ।

HkkokFk% जो पूर्व जन्म के कर्म आगे आते हैं उन्हे दैव (भाग्य) कहते है। इसलिए किसी को भी अपने प्रयासों को छोडना नहीं चाहिए और कठोर मेहनत करनी चाहिए।

3. dhVk·fi l|eu%l³xknkjkgfr lrk f'kj%A

v'ek·fi ;kfr noRo egfnHk% l|çfrf"Br% A ...A

vUo;%& कीटः अपि सुमनःसङ्गात् सतां शिरः–आरोहति, अश्मा अपि महद्भिः सुप्रतिष्ठितः (सन्) देवत्वं याति ।

HkkokFk% एक कीट पुण्य के सहारे से अच्छे लोगों के मस्तक तक पहुँच जाता है। यहाँ तक कि एक पत्थर को ठीक से तराशा जाये तो वह मूर्तिरूप में देवत्व को प्राप्त कर लेता है।

4. dk0;'kkL=fouksnu dkyks xPNfr /kherke A
 0;lusu p ew[kk.kka fuæ;k dygsu ok A †A

vUo;%& धीमतां कालः काव्यशास्त्रविनोदेन गच्छति, मूर्खाणां (तु कालः) व्यसनेन निद्रया कलहेन वा (गच्छति) ।

HkkokFkZ% बुद्धिमान व्यक्ति अपना समय साहित्य और दर्शन के अध्ययन में व्ययतीत करते हैं जबकि मूर्ख व्यक्ति व्यसन, निद्रा अथवा लडाई–झगडे में समय खराब करते रहते हैं।

5. vlk/kuk foÙkghuk cq)eUr% lâÙkek% A
 lk/k;UR;k'kq dk;kZf.k dkdde`xk[kqor~ A ‡A

vUo;%& असाधनाः वित्तहीनाः बुद्धिमन्तः सुहृत्तमाः काककूर्ममृगाऽखुवत् कार्याणि आशु साधयन्ति।

HkkokFkZ% कौवे, कछुवे, हिरण तथा चुहे कि तरह बुद्धिमान लोग अपनी बुद्धिमता के बल पर अपना कार्य समय पर करते है चाहे उनके पास साधन तथा धन की कमी ही क्यों न हो।

6. 'kkdLFkkulglkf.k Hk;LFkku'krkfu p A

fnols fnols e<ekfo'kfUr u if.Mre A ^A

vUo;%& शोकस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि च दिवसे दिवसे मूढम् आविशन्ति, न तु पण्डितम्।

HkkokFk% भय के एक सौ कारण हो सकते है और दुख के हजारों। इन सबसे दिन–ब–दिन मूर्ख व्यक्ति चिन्तित हो सकते हैं, समझदार इनकी परवाह नहीं करते।

7. mRFkk;kRFkk; ck)0;! egnHk;e|ifLFkre A

ej.k0;kf/k'kkdkuk fde| fuifr';fr A ‰ A

vUo;%& उत्थाय उत्थाय अद्य मरणव्याधिशोकानां किं निपतिश्यति (इति यद) महत् भयम् उपस्थितम् (तत्) बोद्धव्यम् ।

HkkokFk% प्रत्येक दिन आगे बढ़ते समय यह सोचना चाहिए कि कब मरण–व्यधि–दुख उत्पन्न हो जाये, इसलिए हमेशा ऐसी परिस्थितियों के लिए सचेत रहना चाहिए।

8. d³d.kL; rq ykHku eXu%i³d lqnLrjA
o)0;k?k.k lçklr% ifFkd% lEerk ;Fkk A ŠA

अन्वयः— कङ्कणस्य तु लोभेन सुदुस्तरे पङ्के मग्नः पथिकः वृद्धव्याघ्रेण सम्प्राप्तः यथा सम्मृतः।

HkkokFk% सोने के कङ्कण के लालच में मग्न होकर पथिक गहरे कीचड़ में फंस गया और एक वृद्ध चीते के द्वारा पकड़े जाकर मृत्यु को प्राप्त हो गया। (लालच बुरी बला है) जीवन में लालच नहीं करना चाहिए।

9. vfu"Vkfn"VykHk·fi u xfr tk;r 'kHkkA
;=k·Lr fo"klalxk·er rnfi eR;o A ‹ A

vUo;%& अनिष्टाद् इष्टलाभे अपि शुभा गतिः न जायते, यत्र विषसंसर्गः आस्ते तद् अमृतम् अपि मृत्यवे (भवति)।

Hkkok;% अनचाही चीज से कहीं भी कभी भी इष्टलाभ गति को प्राप्त नहीं करता है, क्योंकि जहाँ पर विष फैला हो वहाँ पर अमृत जहर के संसर्ग से विष तुल्य हो जाता है।

10. u l'k;euk#á ujks Hkækf.k i';fr A
l'k;a iqujk#á ;fn thofr i';fr A få A

अन्वयः— नरः संशयम् अनारुह्य भद्राणि न पश्यति, पुनः संशयम् आरुह्य यदि जीवति, (तदा) पश्यति ।

Hkkok;% कठिन कार्य की शुरूआत किये बिना मुख्य कल्याण की तरफ नहीं जा सकता है। यदि वह कठिनाई के रास्ते पर आगे बढ़ता और जीवित रहता है तो उसे अच्छे भाग्य की प्राप्ति होती है।

'kCnkFk%

अतन्द्रितः —आलस्यं विहायेत्यर्थः, पुरुषकारेण—पुरुषप्रयत्नेन, सुमनःसङ्गात्—सुमनसो कुसुमानां सङ्गः, अश्मा —प्रस्तरः, काव्यशास्त्रविनोदेन— काव्यम्—कवेः कर्म काव्यं—रसान्वितं व्याख्यानं वचनमिति यावत् , तदेव शास्त्रम् इति काव्यशास्त्रम्, तेन यो विनोदः, शोकस्थानसहस्राणि — सहस्रशः शोकस्य निमित्तानि, उपस्थितम् — समागतं स्यात्, सुदुस्तरे — अतिदुःखेनाऽपि तरितुम् अशक्यं सुदुस्तरं तस्मिन् अतिगाढे, विषसंसर्गः — गरलस्य किञ्चिन्मात्रसंसर्गः।

ikBxr i'u& 5-1

1. एक शब्द में उत्तर लिखिए–

   i. रथस्य गतिः केन न भवति ?

   ii. कीटः कस्मात् सतां शिरः आरोहति ?

   iii. धीमताः कालः केन गच्छति ?

   iv. वृद्धव्याघ्रेण सम्प्राप्तः कः सम्मष्तो?

   v. संशयमनारुह्य नरः किं न पश्यति ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

   i. यथा _______ न रथस्य गतिर्भवेत् ।

   ii. काव्यशास्त्रविनोदेन _______ गच्छति धीमताम् ।

   iii. तस्मात् ______________यत्नं कुर्यादतन्द्रितः ।

   iv. दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति _______ ।

   v. ____________ न गतिर्जायते शुभा।

vkius D;k lh[kk\

- श्लोकों का उच्चारण।
- श्लोकों के अर्थ ज्ञान से नैतिक मूल्यों का महत्व।

ikBkr i'u

1. पाठ में दिये श्लोकों का उच्चारण कीजिए तथा लिखिए।
2. पाठ में दियें श्लोकों मे दिये गये अर्थ को अपनी भाषा में लिखिए।

mÙkjekyk

5.1

1.

i. एकेन चक्रेण

ii. सुमनः सङ्.गात्

iii. काव्यशास्त्रविनोदेन

iv. पथिकः

v. भद्राणि

lnopu

2.

i. ह्येकेन चक्रेण

ii. कालो

iii. पुरूषकारेण

iv. न पण्डितम्

v. अनिष्टादिष्टलाभेपि